National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 159-163
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

प्रतीक माली
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय,
धारवाड़ (कर्नाटक)

Correspondence:
प्रतीक माली
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय,
धारवाड़ (कर्नाटक)

मुंशी प्रेमचंद की 'जिहाद' : यथार्थ और मानवीय मूल्य

प्रतीक माली

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21130949

सारांश

हिन्दी कथा-साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान यथार्थवादी परंपरा के सर्वाधिक प्रभावशाली और युगप्रवर्तक कथाकारों में माना जाता है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक समस्याओं का अत्यंत संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि समाज को दिशा प्रदान करने वाली विचारोत्तेजक रचनाएँ भी हैं। प्रेमचंद की चर्चित कहानियों के बीच 'जिहाद' एक ऐसी महत्वपूर्ण किन्तु अपेक्षाकृत कम चर्चित कहानी है, जिसमें धार्मिक उन्माद, धर्मांतरण, सांस्कृतिक अस्मिता, आत्मगौरव, स्त्री-चेतना तथा मानवीय मूल्यों के संकट जैसे गंभीर प्रश्नों को कथात्मक रूप प्रदान किया गया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में 'जिहाद' कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, भाषा-शैली तथा उद्देश्य के आधार पर किया गया है। कहानी का कथानक धार्मिक हिंसा की पृष्ठभूमि में मनुष्य के नैतिक साहस और मूल्यबोध की परीक्षा प्रस्तुत करता है। धर्मदास, खजानचंद और श्यामा जैसे पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने भय और साहस, स्वार्थ और त्याग, तथा प्रेम और कर्तव्य के मध्य उत्पन्न होने वाले द्वंद्व को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। विशेष रूप से श्यामा का चरित्र भारतीय स्त्री की विवेकशीलता, नैतिक दृढ़ता और मूल्यनिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि खजानचंद आत्मसम्मान और सांस्कृतिक निष्ठा के प्रतीक के रूप में उभरता है। दूसरी ओर धर्मदास का चरित्र संकट की घड़ी में मानवीय दुर्बलता और मानसिक संघर्ष का द्योतक है।

कहानी के संवाद संक्षिप्त होते हुए भी प्रभावपूर्ण हैं तथा पात्रों के मनोविज्ञान को उद्घाटित करते हैं। प्रेमचंद की हिन्दुस्तानी भाषा-शैली, तत्सम एवं अरबी-फारसी शब्दावली का संतुलित प्रयोग, मुहावरों और बिंबों की सघनता तथा सूत्रात्मक कथन इस कहानी को विशिष्ट कलात्मकता प्रदान करते हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'जिहाद' केवल धार्मिक संघर्ष का आख्यान नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की नैतिक प्रतिबद्धता, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े प्रश्नों को भी गहराई से प्रस्तुत करती है। यद्यपि कहानी के कुछ प्रसंग आलोचनात्मक बहस को जन्म देते हैं, तथापि यह प्रेमचंद की वैचारिक व्यापकता और मानवीय दृष्टि को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण रचना सिद्ध होती है। इसलिए 'जिहाद' का पुनर्पाठ हिन्दी कथा-साहित्य के वैचारिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन के लिए अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है।

कुंजी शब्द : मुंशी प्रेमचंद, जिहाद, सांप्रदायिकता, धर्मांतरण, चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली, हिन्दी कहानी।

प्रस्तावना

हिन्दी कथा-साहित्य के इतिहास में मुंशी प्रेमचंद का नाम एक ऐसे युगप्रवर्तक साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित है, जिन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर सामाजिक चेतना और

मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का प्रभावी साधन बनाया। उन्हें 'उपन्यास सम्राट' के साथ-साथ आधुनिक हिन्दी कहानी का सशक्त शिल्पी भी माना जाता है। प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के विविध वर्गों के जीवन-संघर्ष, आर्थिक विषमताओं, सामाजिक रूढ़ियों, नैतिक संकटों तथा मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण किया है। किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, मध्यवर्ग और शोषित समुदायों की समस्याओं को उन्होंने जिस गहन संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ प्रस्तुत किया, वह हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन भारतीय समाज का जीवंत दस्तावेज़ सुरक्षित दिखाई देता है।

प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय जीवन के बहुआयामी यथार्थ को उद्घाटित करती हैं। 'पंच परमेश्वर' में न्याय और मित्रता, 'ईदगाह' में मानवीय संवेदना और त्याग, 'सद्गति' में सामाजिक विषमता, 'कफन' में गरीबी और मानवीय पतन तथा 'पूस की रात' में किसान जीवन की त्रासदी का मार्मिक चित्रण मिलता है। इन प्रसिद्ध कहानियों के मध्य 'जिहाद' एक ऐसी महत्वपूर्ण कहानी है, जिस पर अपेक्षाकृत कम आलोचनात्मक विमर्श हुआ है। यद्यपि यह कहानी प्रेमचंद के कथा-साहित्य का ही अंग है, फिर भी साहित्यिक चर्चाओं और पाठ्यक्रमों में इसे अपेक्षित स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। परिणामस्वरूप इसके वैचारिक एवं कलात्मक पक्षों का सम्यक् मूल्यांकन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

'जिहाद' कहानी धार्मिक उन्माद और सामुदायिक तनाव की पृष्ठभूमि में मानवीय मूल्यों की परीक्षा प्रस्तुत करती है। इसमें प्रेम, धर्म, आत्मगौरव, भय, साहस, निष्ठा और कायरता के मध्य उत्पन्न द्वंद्व को कथा का आधार बनाया गया है। कहानी यह प्रश्न उठाती है कि संकट की परिस्थितियों में मनुष्य किन मूल्यों को सर्वोच्च मानता है तथा उसके निर्णय उसके व्यक्तित्व और सामाजिक पहचान को किस प्रकार निर्मित करते हैं। धर्मदास, खजानचंद और श्यामा जैसे पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने मनुष्य की आंतरिक मानसिकता, नैतिक प्रतिबद्धता और सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से श्यामा का चरित्र भारतीय स्त्री की विवेकशीलता, मूल्यनिष्ठा और नैतिक दृढ़ता का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य 'जिहाद' कहानी का कथ्य, चरित्र-चित्रण, संवाद-विन्यास, भाषा-शैली तथा उद्देश्य की दृष्टि से आलोचनात्मक अध्ययन करना है। साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से धार्मिक कट्टरता, मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे प्रश्नों को किस प्रकार साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। वस्तुतः 'जिहाद' केवल एक कथात्मक रचना नहीं, बल्कि अपने समय की सामाजिक जटिलताओं और मानवीय द्वंद्वों का दर्पण है। इसलिए इस कहानी का पुनर्पाठ न केवल प्रेमचंद की वैचारिक दृष्टि को समझने के लिए आवश्यक है, बल्कि हिन्दी कथा-साहित्य की बहुआयामी परंपरा के पुनर्मूल्यांकन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

कथावस्तु और विषयवस्तु

मुंशी प्रेमचंद की 'जिहाद' कहानी का कथानक पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र की पृष्ठभूमि पर निर्मित है, जहाँ धार्मिक उन्माद और सामुदायिक संघर्ष के कारण उत्पन्न भयावह परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। कहानी का आरंभ ऐसे हिन्दू समुदाय से होता है, जो अपने प्राणों की रक्षा के लिए अपने घर-बार, संपत्ति और परिचित परिवेश को छोड़कर पलायन करने के लिए विवश हो गया है। यह स्थिति केवल भौतिक विस्थापन की नहीं, बल्कि सामाजिक असुरक्षा, सांस्कृतिक संकट और अस्तित्वगत भय की भी अभिव्यक्ति है। प्रेमचंद ने अत्यंत संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली शैली में उस आतंकपूर्ण वातावरण का चित्रण किया है, जिसमें लोग अपने भविष्य के प्रति आशंकित होकर अनिश्चित यात्रा पर निकल पड़ते हैं।

इस पलायनशील समूह में धर्मदास, खजानचंद और श्यामा कहानी के प्रमुख पात्र हैं, जिनके माध्यम से कथानक का विकास होता है। श्यामा का भावनात्मक लगाव धर्मदास के प्रति है, जबकि उसकी बुआ खजानचंद को उसके लिए अधिक उपयुक्त वर मानती है। इस प्रकार कहानी के आरंभिक स्तर पर एक प्रेम-त्रिकोण की स्थिति निर्मित होती है, जो आगे चलकर केवल व्यक्तिगत संबंधों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्व की वास्तविक पहचान का माध्यम बन जाती है।

कथानक का निर्णायक मोड़ तब आता है, जब यात्रा के दौरान धार्मिक उन्माद से प्रेरित आक्रमणकारियों द्वारा इस समूह को घेर लिया जाता है। संकट की इस घड़ी में धर्मदास प्राणरक्षा को सर्वोपरि मानते हुए धर्म-परिवर्तन स्वीकार कर लेता है। दूसरी ओर खजानचंद अपने धर्म, आत्मसम्मान और विश्वास के प्रति अडिग रहते हुए मृत्यु का वरण करता है। प्रेमचंद ने इन दोनों पात्रों की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से मनुष्य की दो भिन्न मानसिक अवस्थाओं का चित्रण किया है—एक ओर भय से उत्पन्न आत्मसमर्पण और दूसरी ओर आदर्शों के प्रति अटूट निष्ठा। यही द्वंद्व कहानी को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करता है।

खजानचंद की मृत्यु के पश्चात श्यामा के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। जिस धर्मदास से वह प्रेम करती थी, उसका व्यक्तित्व उसके सामने साहसहीन और मूल्यहीन प्रतीत होने लगता है, जबकि खजानचंद त्याग, आत्मगौरव और नैतिक दृढ़ता के कारण आदर्श पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो उठता है। श्यामा का यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत भावनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि उसके

मूल्यबोध और विवेकपूर्ण निर्णय क्षमता का परिचायक भी है। इस प्रकार प्रेमचंद ने स्त्री पात्र को केवल करुणा या भावुकता का प्रतीक न बनाकर नैतिक निर्णय की सक्रिय वाहक के रूप में प्रस्तुत किया है।

विषयवस्तु की दृष्टि से 'जिहाद' बहुस्तरीय अर्थवत्ता से युक्त कहानी है। प्रथम दृष्टि में यह धार्मिक संघर्ष की कथा प्रतीत होती है, किन्तु गहन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इसका मूल सरोकार मनुष्य के चरित्र, नैतिक साहस और आत्मगौरव से जुड़ा हुआ है। कहानी यह प्रश्न उपस्थित करती है कि विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति अपने जीवन, विश्वास और मूल्यों के मध्य किसे प्राथमिकता देता है। साथ ही यह भी स्पष्ट करती है कि संकट की घड़ी में लिए गए निर्णय ही व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व को उद्घाटित करते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि 'जिहाद' की कथावस्तु केवल घटनाओं का क्रम नहीं है, बल्कि मानवीय मूल्यों की परीक्षा, नैतिक दृढ़ता, सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान की प्रतिष्ठा का साहित्यिक रूपांतरण है। धार्मिक कट्टरता की पृष्ठभूमि में रचित यह कहानी पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है तथा यह संदेश देती है कि मनुष्य का वास्तविक मूल्य उसके साहस, सिद्धांतनिष्ठा और नैतिक प्रतिबद्धता में निहित होता है।

चरित्र-चित्रण

मुंशी प्रेमचंद की कथा-कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में उनका सशक्त चरित्र-चित्रण उल्लेखनीय है। उनके पात्र केवल घटनाओं के निष्क्रिय सहभागी नहीं होते, बल्कि परिस्थितियों के साथ संघर्ष करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं। प्रेमचंद अपने पात्रों के बाह्य व्यवहार के साथ-साथ उनके आंतरिक मनोविज्ञान, नैतिक द्वंद्व और मूल्यबोध को भी अत्यंत सूक्ष्मता से उद्घाटित करते हैं। 'जिहाद' कहानी में भी चरित्र-चित्रण की यही विशेषता दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि कहानी का आकार अपेक्षाकृत छोटा है, फिर भी धर्मदास, खजानचंद और श्यामा जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने मानवीय प्रवृत्तियों के विविध आयामों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। ये तीनों पात्र क्रमशः भय और आत्मसमर्पण, साहस और आत्मगौरव तथा विवेक और नैतिक नेतृत्व के प्रतीक के रूप में उभरते हैं।

कहानी का पहला प्रमुख पात्र **धर्मदास** है, जो संकट की स्थिति में मानवीय दुर्बलता और आत्मरक्षा की सहज प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। प्रारम्भ में वह शारीरिक रूप से सुदृढ़, आत्मविश्वासी और साहसी प्रतीत होता है, किंतु वास्तविक संकट के समय उसका आत्मविश्वास डगमगा जाता है। प्राणों के भय से वह धर्म-परिवर्तन स्वीकार कर लेता है। उसके चरित्र का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसके नाम और आचरण के मध्य विद्यमान विरोधाभास है। 'धर्मदास' अर्थात् धर्म का सेवक या संरक्षक, किंतु परिस्थितियों के दबाव में वही अपने धर्म और सिद्धांतों का त्याग कर देता है। इस प्रकार प्रेमचंद ने उसके माध्यम से यह संकेत किया है कि मनुष्य का वास्तविक चरित्र विपरीत परिस्थितियों में ही प्रकट होता है। धर्मदास केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि उस मानसिक स्थिति का प्रतिनिधि है जिसमें भय नैतिक मूल्यों पर भारी पड़ जाता है।

खजानचंद कहानी का दूसरा प्रमुख पात्र है, जो धर्मदास के विपरीत आदर्शवादी और आत्मगौरव से परिपूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। बाह्य रूप से वह साधारण, दुबला-पतला और आकर्षणहीन प्रतीत होता है, किन्तु उसके भीतर अद्भुत साहस, दृढ़ता और आत्मसम्मान का भाव विद्यमान है। संकट की घड़ी में वह अपने विश्वास और सांस्कृतिक निष्ठा से समझौता नहीं करता तथा मृत्यु का वरण करना स्वीकार करता है। उसका चरित्र यह स्थापित करता है कि व्यक्ति की महानता उसके बाह्य स्वरूप में नहीं, बल्कि उसके सिद्धांतों और आंतरिक शक्ति में निहित होती है। प्रेमचंद ने खजानचंद को आत्मबल, त्याग और नैतिक प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। इसी कारण कहानी के अंत तक वह आदर्श पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है और पाठक के मन में गहरी छाप छोड़ता है।

कहानी का सर्वाधिक प्रभावशाली और सशक्त चरित्र **श्यामा** का है। प्रारम्भ में वह एक सामान्य युवती के रूप में सामने आती है, जिसका भावनात्मक लगाव धर्मदास के प्रति है; किन्तु परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ उसका व्यक्तित्व अत्यंत परिपक्व और विवेकपूर्ण रूप में विकसित होता है। वह भावनात्मक आकर्षण से अधिक नैतिक आदर्शों और मूल्यनिष्ठा को महत्त्व देती है। धर्मदास के आत्मसमर्पण और खजानचंद के आत्मोत्सर्ग के बाद वह दोनों के चरित्रों का निष्पक्ष मूल्यांकन करती है और आत्मगौरव तथा सिद्धांतनिष्ठा को श्रेष्ठ मानती है। उसके निर्णय में भावुकता की अपेक्षा विवेक और नैतिक दृष्टि की प्रधानता दिखाई देती है। प्रेमचंद ने श्यामा के माध्यम से भारतीय स्त्री की प्रेरक शक्ति, निर्णय क्षमता और नैतिक नेतृत्व को रेखांकित किया है। वह केवल प्रेमिका नहीं, बल्कि मूल्य-संरक्षिका और आदर्श चेतना की प्रतिनिधि बनकर उभरती है।

इस प्रकार 'जिहाद' का चरित्र-चित्रण प्रेमचंद की मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ और कलात्मक दक्षता का उत्कृष्ट उदाहरण है। सीमित पात्रों के माध्यम से उन्होंने मानवीय स्वभाव की जटिलताओं, नैतिक संघर्षों और जीवन-मूल्यों की गहन अभिव्यक्ति की है। धर्मदास, खजानचंद और श्यामा केवल कथानक को आगे बढ़ाने वाले पात्र नहीं हैं, बल्कि वे भय और साहस, स्वार्थ और त्याग तथा प्रेम और कर्तव्य के मध्य चलने वाले शाश्वत मानवीय द्वंद्व के प्रतिनिधि हैं। यही कारण है कि इन पात्रों का प्रभाव कहानी समाप्त होने के बाद भी पाठक के मन में लंबे समय तक बना रहता है।

सांप्रदायिक चेतना और धार्मिक कट्टरता

मुंशी प्रेमचंद की 'जिहाद' कहानी का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष सांप्रदायिक चेतना और धार्मिक कट्टरता का चित्रण है। प्रेमचंद मूलतः मानवतावादी दृष्टि के साहित्यकार थे। उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में धार्मिक सद्भाव, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया, किन्तु जहाँ कहीं धर्म के नाम पर उत्पन्न होने वाली अमानवीयता और सामाजिक विघटन दिखाई देता है, वहाँ उन्होंने उसे यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित करने का साहस भी किया। 'जिहाद' इसी दृष्टि की प्रतिनिधि कहानी है, जिसमें धार्मिक उन्माद से उत्पन्न हिंसा और उसके मानवीय परिणामों को कथा का आधार बनाया गया है।

कहानी यह संकेत करती है कि जब धर्म अपने मूल मानवीय उद्देश्यों से विमुख होकर कट्टरता, असहिष्णुता और उन्माद का रूप धारण कर लेता है, तब वह करुणा, सह-अस्तित्व और मानवता जैसे मूल्यों को नष्ट कर देता है। धार्मिक पहचान व्यक्ति के नैतिक विकास का माध्यम बनने के स्थान पर हिंसा और वैमनस्य का कारण बन जाती है। प्रेमचंद इस स्थिति को किसी एक समुदाय के प्रति घृणा के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि धार्मिक उन्माद की उस मानसिकता की ओर संकेत करते हैं, जो मनुष्य को विवेकहीन बनाकर उसे अमानवीय कृत्यों की ओर प्रेरित करती है। इस प्रकार कहानी धार्मिक कट्टरता के सामाजिक और नैतिक दुष्परिणामों का उद्घाटन करती है।

कहानी का अंतिम भाग विशेष रूप से आलोचकों के मध्य चर्चा का विषय रहा है। खजानचंद की मृत्यु और श्यामा के करुण विलाप के पश्चात आक्रमणकारी पात्रों के हृदय-परिवर्तन का चित्रण अनेक प्रश्न उपस्थित करता है। कुछ आलोचक इसे प्रेमचंद की गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव मानते हैं, जिसके अनुसार प्रेम, करुणा और नैतिक आचरण के माध्यम से विरोधी के अंत:करण को परिवर्तित किया जा सकता है। दूसरी ओर कुछ विद्वानों का मत है कि यह प्रसंग प्रेमचंद की मूल मानवीय आस्था का प्रतीक है, जिसमें वे मनुष्य के भीतर विद्यमान करुणा और संवेदना की अंतिम संभावना को बचाए रखना चाहते हैं। इन दोनों दृष्टियों से यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद केवल सामाजिक यथार्थ का यांत्रिक चित्रण नहीं करते, बल्कि उसके भीतर नैतिक आदर्शों और मानवीय संभावनाओं की खोज भी करते हैं। यही उनकी रचनात्मक दृष्टि की विशिष्टता है।

'जिहाद' कहानी की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता इसकी संवाद योजना है। प्रेमचंद के संवाद सदैव पात्रानुकूल, संक्षिप्त और प्रभावोत्पादक होते हैं। वे केवल कथानक को आगे बढ़ाने का कार्य नहीं करते, बल्कि पात्रों के मनोविज्ञान, उनके वैचारिक धरातल तथा परिस्थितिजन्य प्रतिक्रियाओं को भी उद्घाटित करते हैं। 'जिहाद' में संवादों के माध्यम से ही पात्रों की आंतरिक चेतना पाठक के सामने स्पष्ट होती है।

धर्मदास और खजानचंद के संवादों में जीवन-दृष्टि का स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। एक ओर धर्मदास भय और आत्मरक्षा की मनोवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है, तो दूसरी ओर खजानचंद आत्मसम्मान और सिद्धांतनिष्ठा के पक्षधर के रूप में उभरता है। दोनों के विचारों और प्रतिक्रियाओं के माध्यम से प्रेमचंद ने साहस और कायरता, आत्मगौरव और आत्मसमर्पण के मध्य उपस्थित नैतिक द्वंद्व को प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया है।

श्यामा के संवाद कहानी को वैचारिक ऊँचाई प्रदान करते हैं। उसके कथनों में भावुकता की अपेक्षा नैतिक स्पष्टता और विवेकपूर्ण दृष्टि अधिक दिखाई देती है। वह परिस्थितियों के दबाव में अपने मूल्यों से समझौता नहीं करती, बल्कि साहस, त्याग और आत्मगौरव को श्रेष्ठ मानती है। उसके संवाद स्त्री-चेतना, निर्णय क्षमता और मूल्यनिष्ठा के सशक्त उदाहरण हैं। संवादों की यह सघनता और नाटकीयता कहानी के प्रभाव को तीव्र बनाती है तथा पाठक को पात्रों के मानसिक संघर्ष से जोड़ देती है। यही कारण है कि 'जिहाद' का नाट्य रूपांतरण भी अत्यंत सहज और प्रभावपूर्ण प्रतीत होता है।

भाषा और शैली

भाषा और शैली की दृष्टि से 'जिहाद' प्रेमचंद की कथात्मक दक्षता का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रेमचंद की भाषा को सामान्यतः हिन्दुस्तानी शैली की भाषा कहा जाता है, जिसमें हिन्दी और उर्दू दोनों की शब्द-संपदा का संतुलित और स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा न तो अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ है और न ही अत्यधिक फारसीकृत; अपितु वह जनसामान्य की बोलचाल के निकट होते हुए भी साहित्यिक गरिमा से सम्पन्न है।

'जिहाद' में अरबी-फारसी मूल के शब्दों का प्रयोग कथा की पृष्ठभूमि और पात्रों के अनुरूप हुआ है, वहीं आवश्यकतानुसार तत्सम शब्दावली का प्रयोग भाषा को गंभीरता और वैचारिक ऊँचाई प्रदान करता है। प्रकृति-वर्णन, बिंबात्मकता और ध्वन्यात्मक शब्दों के माध्यम से लेखक वातावरण की सजीवता का निर्माण करते हैं। उदाहरणतः भय, प्यास, थकान और अनिश्चितता से भरे वातावरण का चित्रण पाठक के मन में प्रत्यक्ष अनुभूति उत्पन्न करता है।

इसके अतिरिक्त मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूत्रात्मक वाक्यों का प्रयोग प्रेमचंद की शैली को विशिष्ट बनाता है। उनके अनेक कथन तत्कालीन कथा-परिस्थिति से आगे बढ़कर सार्वकालिक जीवन-सत्यों का रूप ग्रहण कर लेते हैं। उनकी शैली सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण होते हुए भी गहन संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ सामान्य पाठक से लेकर गंभीर अध्येता तक सभी को समान रूप से आकर्षित करती हैं।

कहानी का उद्देश्य

प्रेमचंद ने स्वयं स्वीकार किया है कि उनकी अधिकांश कहानियाँ किसी न किसी नैतिक, सामाजिक अथवा भावात्मक उद्देश्य से प्रेरित होती हैं। वे साहित्य को समाज से पृथक् नहीं मानते थे, बल्कि उसे लोकमंगल और मानवीय चेतना के विकास का माध्यम समझते थे। 'जिहाद' कहानी भी इसी दृष्टि का परिणाम है। इसमें केवल घटनाओं का वर्णन या रोमांच उत्पन्न करने का प्रयास नहीं किया गया है, बल्कि मनुष्य के नैतिक चरित्र और मूल्यबोध से जुड़े प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है।

कहानी के माध्यम से आत्मसम्मान, नैतिक साहस, सांस्कृतिक निष्ठा और मूल्यनिष्ठ जीवन के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। प्रेमचंद यह संकेत करते हैं कि संकट की परिस्थितियाँ मनुष्य के वास्तविक व्यक्तित्व की परीक्षा लेती हैं। ऐसे समय में उसके निर्णय ही उसके चरित्र की पहचान बनते हैं। धर्मदास, खजानचंद और श्यामा के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि भय, स्वार्थ, प्रेम, कर्तव्य और आत्मगौरव के मध्य संतुलन स्थापित करना मानव जीवन की सबसे बड़ी चुनौती है।

इस प्रकार 'जिहाद' केवल धार्मिक संघर्ष की कहानी नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की नैतिक चेतना, आत्मनिर्णय की क्षमता और जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा का साहित्यिक दस्तावेज़ है। यह पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है तथा यह विचार करने का अवसर प्रदान करती है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में व्यक्ति किन मूल्यों को सर्वोच्च मानता है और किस प्रकार उसके निर्णय उसके व्यक्तित्व, सामाजिक पहचान तथा जीवन-दृष्टि का निर्माण करते हैं। यही इस कहानी का मूल उद्देश्य और उसकी स्थायी प्रासंगिकता है।

उपसंहार

'जिहाद' मुंशी प्रेमचंद की उन महत्वपूर्ण कहानियों में है, जो धार्मिक कट्टरता, नैतिक द्वंद्व और मानवीय साहस जैसे प्रश्नों को केंद्र में रखती हैं। कहानी का कथ्य पाठक को आत्मगौरव, मूल्यनिष्ठा और विवेकपूर्ण निर्णय की ओर प्रेरित करता है। चरित्र-चित्रण, संवाद-विन्यास और भाषा-शैली की दृष्टि से यह प्रेमचंद की उल्लेखनीय रचनाओं में स्थान पाने की अधिकारी है। यद्यपि इसके कुछ प्रसंग आलोचनात्मक बहस को जन्म देते हैं, तथापि यह कहानी भारतीय समाज की जटिल वास्तविकताओं तथा लेखक की मानवीय दृष्टि को समझने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होती है।

संदर्भ सूची

1. बच्चन सिंह. *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास*. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन।
2. रामविलास शर्मा. *प्रेमचंद और उनका युग*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
3. नामवर सिंह. *कहानी : नई कहानी*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
4. गोपाल राय. *हिन्दी कहानी का इतिहास*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
5. नगेन्द्र (सं.). *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।